Quest Journals
Journal of Research in Humanities and Social Science
Volume 3 ~ Issue 12 (2015) pp : 46-47
ISSN(Online) : 2321-9467
www.questjournals.org

Research Paper

गांधी का स्वदेशी मॉडल व आर्थिक विकास

डॉ० सुरेंद्र सिंह
व्याख्याता राजनितिक विज्ञानं राजकीय महाविद्यालय बहरोड़ अलवर राजस्थान

प्रस्तावना:-

श्री मोहनदास करमचंद गांधी, जिनका जन्म 2 अक्टूबर 1869 में गुजरात के पोरबंदर नामक क्षेत्र में हुआ था, एक सच्चे देश भक्त समाज सुधारक, सामाजिक, दार्शनिक और भारतीय स्वतंत्रता में अपना अमूल्य योगदान देने के साथ-साथ मानवतावादी दृष्टिकोण से ओत-प्रोत थे। उन्होंने अपने सम्पूर्ण जीवन काल में मानव जाति की गरिमा तथा राष्ट्र को सुदृढ़ बनाये रखने के लिये कार्य किये थे। इस हेतु उनके द्वारा दिये गये सिद्धांत जैसे- सत्य अहिंसा एवं उपरिग्रह मनुष्य के कार्यक्षेत्र में यर्थाथवाद और एक सच्चे मनुष्य का वर्णन करने में सहयोग करते हैं। महात्मा गांधी ने स्वदेशी का विचार अपनाया था और उनके लिए स्वदेशी, आत्मनिर्भरता की ही अभिव्यक्ति थी।

गांधी जी के स्वदेशी अवधारणा:-

महात्मा गांधी जी के स्वदेशी विचार का आरंभ बिंदु अपने पूर्ववर्ती स्वदेशी समर्थकों से भिन्न था। गांधी जी ने उत्पादन पद्धति को अपने स्वदेशी विचार के केंद्र में रखा। भारतीय स्वदेशी के समर्थक इस बात पर बल दे रहे थे कि ब्रिटेन में बनी वस्तुएँ हमारे देश में आकर बिकती है जिससे हमारा धन ब्रिटेन में चला जाता है। इसलिए ऐसी मशीनें और मिलों को भारत में स्थापित कर अपने देश में उत्पादन किया जाना चाहिए। इससे अपने देश का धन अपने देश में रह जाएगा।

भारत अपनी ताकत के बल पर उन्नत कैसे बना रहे इस चिंता को दूर करने के लिए स्वदेशी जैसे विचार पर बल देना गांधीजी के लिए अत्यंत आवश्यक प्रतीत हुआ। इसलिए स्वदेशी का उनका विचार उत्कृष्ट राष्ट्रवादी होने के साथ-साथ व्यावर्तक और समावेशी अंतरराष्ट्रीयवादी भी बन पड़ता है। गांधीजी भारतीय अर्थव्यवस्था में हो रहे बदलाव से वाकिफ थे। लघु एवं कुटीर उद्योगों का ह्रास बड़े पैमाने पर हो रहा था। सभी व्यक्तियों को रोजगार कैसे मिले इसके लिए स्वदेशी को व्रत के रूप में अपनाने कि वकालत गांधीजी ने किया और चरखा को स्वदेशी का पहला हथियार बनाया। गांधीजी सभी का उदय सभी के द्वारा उदय की कामना करते हैं, और यह कामना स्वदेशी-विचार से संभव बन सकती थी। गांधीजी का स्वदेशी-विचार राष्ट्र एवं गांव को उन्नत बनाने का रहा है।

स्वदेशी:- सामान्य शब्दों में स्वदेशी का अभिप्राय हैं स्वयं या खुद द्वारा बनाये गये नियमों, कानूनों व शर्तों का पालन करने हुये अपने साधनों का उपयोग करना। यदि हम स्वदेशी शब्द की उत्पत्ति या जन्म पर दृष्टि डालें तो हमें ज्ञात होता हैं कि यह शब्द - "संस्कृत भाषा के दो शब्दों स्व और देष से मिलकर बना हैं। जिसमें स्व का अर्थ स्वयं या खुद तथा देष का अर्थ हैं देश, इस प्रकार स्वदेश का आशय हुआ अपने देश का साधन, स्वदेशी आदि। लेकिन आज इस शब्द का अधिकांश उपयोग आत्मनिर्भरता के रूप में किया जा रहा हैं।

भारत के महान सामाजिक-दार्शनिक तथा राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी ने इस शब्द के प्रयोग द्वारा देश को आजाद कराने में अपनी अहम भूमिका अदा की थी। उन्होंने स्वदेशी शब्द को एक रणनैतिक केन्द्र एवं स्वराज की आत्मा के रूप में वर्णित किया था।

गांधीजी के अनुसार - स्वदेशी विचारों का पालन करने वाला हमेशा अपने आस-पास निरीक्षण करता है और जहाँ-जहाँ पड़ोसीयों की सेवा की जा सकती है, यानी जहाँ उनके हाथ का तैयार किया हुआ जरूरत का माल होगा वहाँ बाहर का माल छोड़ कर उसे लेना होगा। फिर भले ही स्वदेशी चीज पहले से मांगी क्यों न हो घटिया दर्जे की ही क्यों न हो लेकिन स्वदेशी वस्तुओं का ही उपयोग किया जाना चाहिए। स्वदेशी को अपनाने वाला उसे सुधारने की कोशिश करेगा; स्वदेशी चीज खराब है इसलिए कायर बनकर परदेशी चीज का इस्तेमाल नहीं करने लग जाएगा। स्वदेशी को परिभाषित करते हुए गांधीजी ने लिखा है कि "यह वह भावना है जो हमें आस-पास की चीजों तथा सेवाओं का उपयोग करने को प्रेरित करती है तथा अधिक दूरदराज़ की चीजों व सेवाओं पर प्रतिबंध का बोध कराती है।"

गांधी जी ने स्वदेशी को आर्थिक आधार का व्यापक रूप देते हुए कहते हैं कि शहरों द्वारा ग्रामीणों का शोषण बंद किया जाना चाहिए क्योंकि जिस प्रकार देशी उद्योगों को विदेशी निर्माताओं से संरक्षण दिया जाता है, उसी प्रकार कुटीर उद्योगों को भी मशीन से बनी वस्तुओं के विरूद्ध संरक्षण दिया जाना चाहिए।

गांधी के हिंद स्वराज में 'भारत के पूरे आर्थिक (और राजनीतिक) मॉडल' को विस्तार से समझाया गया है। गांधी के लिए स्वदेशी में भारत के उस औपनिवेषिक शोषण को ख़ारिज किया गया था, जिससे ब्रिटिश ख़ज़ाने भरते थे और नतीजे में भारत के ग़रीब और कुचले हुए लोग घाटे में रहते थे। मूर्खतापूर्ण उपभोक्तावाद की कभी ना मिटने वाली भूख को शांत करने के लिए, असीमित औद्योगिक विकास पर आधारित पूंजी वाद, पश्चिमी आर्थिक मॉडल में, खुले बाज़ार का आदर्श बन गया, जिसकी गांधी ने हिंद स्वराज में आलोचना की ब्रिटिश औपनिवेशिक मॉडल अमेरिका तक पहुँचा

दिया गया, और आर्थिक विकास के रामबाण के रूप में प्रचारित किया गया, जिसमें एक अपरिहार्य कारगर साधन के तौर पर, द्वंदात्मक भौतिकवाद के मुक़ाबले, तकनीकी भौतिकवाद को पेश किया गया लेकिन ये वो नहीं था, और इसी कारण हमें फिर से स्वदेशी अर्थशास्त्र की आवश्यकता है।

गांधी के हिंद स्वराज की तरह स्वदेशी मॉडल, टेक्नोलॉजी के ख़िलाफ नहीं था लेकिन इसमें आर्थिक विकास के पश्चिम उन्मुख मॉडल से जुड़े ताम-झाम के बे-लगाम आयात का तिरस्कार किया गया था। इसलिए, 'आधुनिकीकरण चाहिए, पश्चिमीकरण नहीं' 1990 के दशक का एक आकर्षक नारा बन गया, जब पूर्व प्रधानमंत्री नरसिम्हा राव और उनके वित्त मंत्री मनमोहन सिंह, भारतीय अर्थव्यवस्था पर लगे पाँच दशक पुराने समाजवाद के जाले झाड़ रहे थे।

आर्थिक विकास:-

महात्मा गांधी कोई अर्थशास्त्री नहीं थे, और न ही उन्होंने कोई आर्थिक मॉडल ही पेश किया, लेकिन अपने समय में उन्होंने गरीबी और उपेक्षा की जिस तस्वीर को देखा, वह उनके लिए असामान्य थी।

महात्मा गांधी भारतवर्ष को आत्मनिर्भर देखना चाहते थे। उन्होंने माना था कि भारत की आत्मा गांवों में निवास करती है, इसलिए उनका दृष्टिकोण था कि भारत को विकास-मार्ग पर ले जाने के लिए 'ग्राम-विकास' प्राथमिक आवश्यकता है। इस बात को ध्यान में रखते हुए, उन्होंने ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सर्वोपरि स्थान दिया था। उनकी दृष्टि में इस अर्थव्यवस्था का आधार था-'ग्रामीण जीवन का उत्थान'। इसीलिए, गांधीजी ने बड़े-बड़े उद्योगों को नहीं, वरन् छोटे-छोटे उद्योगों (कुटीर उद्योगों) को महत्व प्रदान किया, जैसे-चरखे द्वारा सूत कताई, खद्दर बुनाई तथा आटा पिसाई, चावल कुटाई और रस्सी बांटना आदि।

गांधी जी लघु उद्योग, कुटीर उद्योग से हटकर ग्राम स्वराज का विचार लाए। उनका मानना था कि हर व्यक्ति स्वयं में एक उद्योग बने। वह स्वावलंबन की बात करते थे। बड़े उद्योग की बजाए हर व्यक्ति को अपना काम करते हुए कुछ न कुछ उत्पादन करने की बात करते थे। उनका मानना था कि इससे कोई भी बेरोजगार नहीं रहेगा। सबकी जरूरतें पूरी होंगी और सब लोग काम करेंगे। वह मानते थे कि सब में कुछ न कुछ कौशल है और उसको अपने इस कौशल का उपयोग करना चाहिए।

महात्मा गांधी जी का आर्थिक दर्शन देश की आर्थिक समस्याओं (गरीबी, भुखमरी, बेरोजगारी) तथा राष्ट्र के सर्वांगीण विकास को सूचित करता हैं और यह बताती हैं कि अपने संसाधनों के बल पर इन समस्याओं को किस प्रकार हल किया जाये चाहे वह ग्रामीण क्षेत्र हो या फिर शहर या राष्ट्र, सभी में व्याप्त आर्थिक समस्याओं का समाधान उन्होंने बड़े सटीक व उचित रूप से प्रस्तुत करके एक सच्चे देश भक्त तथा मानवतावादी का परिचय दिया था। गांधी जी ने जहाँ एक तरफ देश के ग्रामीण क्षेत्रों को अहम बताते हुये ग्राम स्वराज का उल्लेख किया हैं। जिसमें ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ता प्रदान करने हेतु लघु व कुटीर जैसे उद्योगों पर दृष्टि डाली हैं वही दूसरी तरफ स्वदेशी शब्द का उपयोग करके एक राष्ट्रवादी भावना प्रस्तुत की हैं।

गाँधी के विचारों पर व्यापक विषयवस्तु के संदर्भ में चर्चा करके, वर्तमान वास्तविकताओं की कसौटी पर उनका परीक्षण करके ही यह पता लगाया जा सकता है कि गाँधी के व्यावसायिक समाधानों में दूरदर्शिता है या तर्कहीनता। गाँधी स्वदेशी में, ग्रामीण आत्मनिर्भरता में, बड़े उद्योगों के बजाय कुटीर और छोटे उद्योगों में और उत्पादन में मशीनों की अपेक्षा श्रम के इस्तेमाल में विश्वास रखते थे।

गांधीजी के आर्थिक विचारों में मानवता सर्वोपरि स्थान ग्रहण करती है। सकल घरेलू उत्पाद तथा विकास संबंधी अन्य सुचिकांक तभी तक मायने रखते हैं जब तक उनसे जन-कल्याण का लक्ष्य पूरा हो सके। गांधी जी एक राष्ट्र, एक युवा, एक नागरिक, एक किसान, एक छात्र को शून्यता की वरीयता से अवगत कराते हैं जिसका एकमात्र उद्देश्य मानवता की सभी परम सीमाओं को लांघकर एक आदर्श राष्ट्र का निर्माण करना है।

संदर्भ सूची

1. एम. के. गांधी - हिंद स्वराज, पृष्ठ संख्या 219-222, हरिजन 4 अगस्त, 1940, पृष्ठ 236

2. अय्यर , राघवन (1997). '' दि मोरल एण्ड पोलिटिकल वार्निंग ऑफ महात्मा गांधी , कलारदन प्रैस , आक्सफोर्ड

3. एम. के. गांधी, यंग इंडिया 8 दिसम्बर, 1920, पी.- 886

4. एस.आर.टिकेकर' बुक एपिग्रैम्स फ्रॉम गाँधी।

5. एम. के. गांधी, यंग इंडिया जून 28, 1928, पी पी 772